ॐ वसन्ताय नमस्तुभ्यम्

डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'

हमारी संस्कृति उत्सवधर्मी है और अनेक दिवस या तिथियां पर्व के उल्लास को लेकर आती है। जन–मानस इन उत्सवों को अनेक रूपों में मनाता है और इससे जो आनंद मिलता है, वह जन समुदाय को ऊर्जा से आप्लावित करता है। भारतीय उत्सवों का यही विज्ञान है कि वे जीवन में आनन्द और रस का संचरण करते हैं। वसन्त ऋतु में होने वाली दामन की पूजा इसका साक्ष्य है। यह शिव को सन्तुष्टि देने वाली है, ऐसा तन्त्रोपासना के ग्रंथों का मत है। इसीलिए इसको शम्भु–दामनक पर्व भी माना गया।

चित्र सौजन्य : डॉ. नाथूलाल वर्मा

ग्यारहवीं सदी में सम्पादित 'ईशानशिवगुरुदेव' पद्धति में ग्रंथकार ने लिखा है कि यह वासंतिकी पूजा पर्व है। इसे वसन्त याग भी कहा जाता है– 'इत्थं वसन्तविहितं सवसन्तयागं प्रोक्तं तदन्तमिह दामनकं हि पर्व। यद्वद् वसन्ततिलकं समनोभिरामं तद्वन्मनोभिलषितान् फलतीह कामान्।।' यह पर्व भगवान् शिव के कामदेव को भस्म करने के प्रसंग से जुड़ा हुआ है। संगीत के ग्रन्थों में इस ऋतु के दौरान वसंत जैसा राग गाने का उल्लेख मिलता है। यह राग चराचर में अनुराग के भाव स्फुटन का हेतु माना जाता है। इसका ध्यान भी इसी रूप में बताया गया है।

कामदमन की कहानी

कथा के अनुसार हैमवत आश्रम पर शिव और शिवा चिर प्रवास के लिए गए थे। वहीं पर नन्दीश्वर सहित अन्य मुनिवृंद थे। शिव अपनी आत्मा को देखते हुए सबीजयोग समाधि की साधना में लगे हुए थे। इस बीच, समय के संयोग से तारकासुर ने देवताओं के साथ ही इन्द्र को जीत लिया और कल्पान्त के तपते सूर्य के समान उग्रता से शेष सभी लोकों को प्रताड़ित करने पर उतारू हुआ। इस पर इन्द्रादि मुख्य देवताओं, मुनियों ने उस असुर के शमन के लिए विचार किया। सभी एकमत हुए कि इस लोक में शिव के सिवाय कोई भी देव दैत्येन्द्र के तेज के शमन के लिए समर्थ नहीं है।

सभी असहाय देवगण और मुनिगण करबद्ध होकर वसन्त वेला की साक्षी में कामदेव के साथ हैमवत स्थित स्थाण्वाश्रम पर पहुंचे। सभी ने शिव की समाधि भंग करने के लिए प्रयास किया। वसन्त के साथ कामदेव ने भी इस कार्य में रुचि ली और अग्रणी रहे। वन प्रदेश प्रस्फुटित हो गया, वृक्ष वैभव लहरा उठा। मन्द-मन्द पवन संचारित होने लगा। गौरी के समक्ष शिव को कदाचित विकार हुआ। स्मरदेव विनय लेकर सामने खड़ा हो गया। इस बीच, शिव के मुख मण्डल पर दिव्य तेज आया और तीसरे नेत्र से प्रचण्ड अग्नि निकली। देखते ही देखते भैरव का आविर्भाव हो गया। शूल और कपालपाणि त्रिलोचन शिव ने कामदेव को भस्मावशेष कर दिया। यह निश्चित ही भीम के अट्टहास के समान भैरवकार्य सिद्ध हुआ।